एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जरबेरा: एक परिचय

(*सतीश कुमार[1], अरविन्द मलिक[1] एवं विवेक भनवाला[2])
[1]बागवानी विभाग,चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार
[2]महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल
*संवादी लेखक का ईमेल पता: skjangra937@gmail.com

जरबेरा, जिसे "Transvaal डेजी" भी कहा जाता है, एक आकर्षक फूल है जो अपने विविध रंगों के लिए प्रसिद्ध है। यह फूल न केवल अपनी सुंदरता के लिए जाना जाता है, बल्कि इसका उत्पादन भी किसानों के लिए एक लाभकारी व्यवसाय साबित हो सकता है। यह एक नाजुक बहुवर्षीक पौधा है जिसमें तना नहीं होता। जरबेरा में जड़ के पास से चारों तरफ से 25-30 की संख्या में हरे रंग के पत्ते निकलते हैं जिनकी लम्बाई लगभग 25-30 सेंटीमीटर तक होती है । जरबेरा के फूल बहुरेंगी होते हैं और उनका व्यास 8-10 सेंटीमीटर तक होता है। इन फूलों के बीच में एक डिस्क फोलेरेट होता है और बाहरी हिस्से में दो-तीन रोटेटेड फोलोरेट होते हैं। फूल का आकार एस्टर या जिनिया की तरह होता है।

जरबेरा फूल को लगाने के मौसम

फूलों की अच्छी पैदावार के लिए जरबेरा को सरिंकक्षित जगह में उठी हुई बेडस पर अक्तूबर् महीने में उगाना चाहिए । अच्छी और जल्दी पैदावार के लिए जरबेरा के लैब में तैयार किए हुए पौधे लगाने चाहिए। रोपाई के लिए कतार की दुरी 30-40 सेंटीमीटर तथा पौधा की दुरी 25-30 सेंटीमीटर' रखते हैं। इस तरह अगर 1.20 मीटर चौड़ा बेड हो तो चार लाइन में पौधे लगेंगे। पौधे को इस तरह लगाते हैं कि :कॉन"मिट्टी के सतह से २-3 सेंटीमीटर ऊँचा रहे। सिंचाई की सुविधा न हो तो एक लाइन में लगाना अच्छा होगा ताकि पानी पटाने में दिक्कत न हो।

जरबेरा की खेती के लिए बेहद महत्वपूर्ण है कि आप उपयुक्त मिट्टी और पोषण प्रदान करें। प्रति वर्गमीटर 5-6 किलो कम्पोस्ट का उपयोग करें और मिट्टी को अच्छे से तैयार करें। बीज से पैदा किए गए पौधों को प्लांट करते समय पानी में बेविस्टीन का घोल बनाकर डिप करें ताकि पौधों को अच्छी रोग प्रतिरोधक क्षमता मिले। रोपने के प्रथम तीन माह तक यूरिया 20 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट 90 ग्राम तथा म्यूरेट ऑफ़ पोटाश 30 ग्राम प्रति वर्गमीटर प्रति माह देना चाहिए। चौथे महीने में जब फूल आने लगे तब दो माह के अंतराल पर प्रति वर्गमीटर यूरिया 30 ग्राम, सिंगल सुपर फास्फेट 60 ग्राम एवं एम्.ओ. पी. 50 ग्राम देना चाहिए। आवश्यकतानुसार निकाई-गुड़ाई एंव सिंचाई देते रहना चाहिए। प्रति वर्गमीटर 4.5-6.0 लीटर पानी प्रतिदिन के हिसाब से लगता है।

जरबेरा में रोपाई के तीन माह बाद फूल आना शुरू करते हैं। फूलों की तोड़ाई तब करते हैं जब बारही डिस्क फ्लोरेट का दो-तीन रो डंठल पर लम्ब बनावें। फूल तोड़ने के लिए फूल डंठल के आधार को धीरे से झुकाकर एक तरफ खिंचाव करने से कॉन अलग हो जायेंगे। सुबह में तोड़ाई करना चाहिए तथा फूल डंठल के आधार को ताजे पानी में रखते जाना चाहिए। दो साल तक फूल मिल सकते हैं।

उपयोग और खेती:

जरबेरा का पौधा गमलों में, वेडों में, बोर्डरों में या रोंक गार्डन में लगाया जा सकता है। इसके फूल काटकर खासतर सजावटी फूलों के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं, क्योंकि ये 5-13 दिनों तक ताजगी बनाए रख सकते हैं। इसके फूल दूर भेजने के लिए भी उपयुक्त होते हैं क्योंकि उनके डंठल मजबूत होते हैं। इसके फूलों का व्यापारिक मूल्य भी अच्छा होता है। प्रति पौधा प्रतिवर्ष 25-30 फूल मिल सकते हैं।

सावधानियाँ:

जरबेरा की खेती के दौरान निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें:

- उपयुक्त मिट्टी का चयन करें और पौधों को सही तरीके से पोषण प्रदान करें।
- पानी की सही मात्रा में सिंचाई करें और पौधों की सुरक्षा के लिए उचित रोगनाशक का प्रयोग करें।
- फूलों की तोड़ाई के लिए सही समय का चयन करें और फूलों की स्वच्छता बनाए रखें।
- उपयुक्त तापमान और प्रकृतिक प्रकार की सुरक्षा प्रदान करने के लिए उपयुक्त कवरिंग का उपयोग करें।

संक्षेप में कहें तो, जरबेरा की खेती करने से आप खूबसूरत और आकर्षक फूल प्राप्त कर सकते हैं, चाहे आप उन्हें अपने बगीचे में लगाएं या उनका व्यापार करें। इसके लिए आपको उचित देखभाल और प्रबंधन की आवश्यकता होती है ताकि आप खुद को इस शानदार पौधे की खेती में सफल बना सकें।